Dr. Jaya
Deptt. of sociology
B.A Part-2 (Hons.)
Paper-4, Unit-
Lecture Series:-64

Topic :- Scaling method

स्केल या पैमाना वह साधन है, जिसके द्वारा हम किसी वस्तु को मापते हैं। भौतिक पदार्थ के लिए विभिन्न प्रकार के पैमानों का उपयोग होता है। जैसे गर्मी अथवा सर्दी को डिग्रियों, लंबाई को मीटर एवं सेंटीमीटर में तथा द्रव पदार्थ को गैलन में। परन्तु सामाजिक घटनाओं में अनेक तथ्य ऐसे होते हैं जिनकी माप हो सकती है, जैसे - व्यक्ति की आयु, उम्र, परिवार का आकार आदि। परंतु कुछ तथ्य ऐसे होते हैं जिनकी प्रत्यक्ष माप संभव नहीं है। इनमें या तो जटिल तथ्य होते हैं। जैसे - सामाजिक स्थिति, रहन-सहन का स्तर, व्यक्तित्व, मिलनसारिता इत्यादि अथवा किसी की रुचि, प्रवृत्ति इत्यादि। पहली कोटि के तथ्यों में रहन सहन के स्तर को ले लीजिए। रहन-सहन का स्तर स्वयं अनेक तत्वों पर आधारित होता है जैसे व्यक्ति के पास पार्थिव साधन कमरे, वस्त्र, फर्नीचर इत्यादि, उनकी रुचि, उसका स्वयं करने का ढंग, शिक्षा, सामाजिक स्तर आदि। स्पष्ट है कि कोई एक माप नहीं हो सकती है।

पैमाने की आवश्यकता

सामाजिक घटना में अधिकतर तथ्य गुणात्मक होते हैं तथा उनकी संख्यात्मक माप संभव नहीं है।

Scanned with CamScanner

पर प्रश्न यह है कि आखिर इसकी आवश्यकता क्या है? गुणात्मक के माप क्यों प्रदान होती है तथा एक ही घटना को विभिन्न माप दी जा सकती है। इससे हमें वह स्थिति का पता नहीं चल पाता। उदाहरणार्थ हम अक्सर लोगों को अनुशासनहीनता, अनैतिकता, बढ़ते हुए रहन-सहन के स्तर की बात करते, सुनते हैं, परन्तु इससे हमें इन तथ्यों की स्थिति का ठीक-ठीक आकार नहीं मिल पाता। क्योंकि किसी साधारण अनुशासनहीनता कहेगा, दूसरा उस घोर अनुशासन-हीनता कह सकता है।

संख्यात्मक वर्णन से ही वैज्ञानिक माप संभव है तथा इसी के द्वारा हमको स्थिति का पता चल सकता है। इसके द्वारा हम समस्या का विवेचन गणितीय आधार पर कर सकते हैं। इस प्रकार का उच्चतर विवेचना प्रायः गणितीय होती है तथा इसके लिए तथ्यों का संख्या में व्यक्त किया जाना आवश्यक है।

सामाजिक विज्ञानों में संख्यात्मक माप के लिए विभिन्न प्रकार के समाजमितीय पैमाने का निर्माण करने का प्रयत्न किया जा रहा है। प्रायः यह समझा जाता है कि सामाजिक तथ्य स्वभावतः गुणात्मक होते हैं। अतएव उन्हें संख्यात्मक माप प्रदान करने के प्रयत्न में मनमाने, अप्रमाणित, झूठे तथा भ्रमोत्पादक माप प्राप्त हो सकते हैं। कोई भी तथ्य स्वभावतः गुणात्मक अथवा संख्यात्मक नहीं होता है। यह विश्वास उस तथ्य के विषय में हमारे अज्ञान के कारण उत्पन्न होता है। सामाजिक घटना प्रायः जटिल तथा अमूर्त होती है। इसलिए उसके संबंध में हमारा ज्ञान इतना महत्वपूर्ण नहीं होता, इसलिए वह हम संख्यात्मक रूप से मापने के अयोग

जान पड़ती है। परंतु ज्यों-ज्यों विज्ञान का विकास होगा, विश्लेषणात्मक उपकरण अनुसंधान द्वारा अधिक शुद्ध तथा उपयोगी बनाये जायेंगे। द्रव्य के संबंध में हमारा ज्ञान अधिक पूर्ण होगा।